ISSN: 2347-2723 Impact Factor :2.0260(UIF) Volume - 4 | Issue - 4 | November - 2016

Review of Literature

साठोत्तरी हिंदी दलित कविता में मानवतावादी स्वर

डॉ. नाजिम शेख
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, श्री. विजयसिंह यादव कला व विज्ञान महाविद्यालय, पो. पेठबढगांव , जिल्हा–कोल्हापुर,महाराष्ट्र.

प्रस्तावना :
मानवतावाद का स्वर लगभग हर कवितामें दिखाई देता है साठोत्तरी हिंदी दलित कविता इसे अपवाद नही हैं! युग का साहित्य बदलती हुई परिस्थिति के अनुरुप बदलता है स साहित्य अपने समय की मांग के अनुसार लिखा जाता है– साठोत्तरी दलित कविता इस बात का सबूत है स इस काल के दलित कविता में दलित जीवन की संवेदनाओं की प्रौढ अभिव्यक्ति हुई है । इन दलित कवियों ने दलित जीवन खुद सहा था स अभावग्रस्त जीवन, रोटी की तलाश, घर कि समस्या, प्रस्थापितों व्दारा किया जानेवाला अन्याय, बचपनसें ही इन कवीयों को दर–दर भटकना पडा, उन्हें जिन यातनाओं से गुजरना पडा उसका यथार्थ चित्रण उनकी कविताओं में हुआ है,–

" याद करो
उस माँ का चेहरा
जिसका बेटा सरेआम पीटा गया
निर्ममता से
जिसने चाही थी करनी दोस्ती
जंगल के फूलों
और नदी के लहरों से "
(ओमप्रकाश वाल्मीकि–बस्स!बहुत हो चुका–पृ. ४२)

कवि अपने परिवार के 'शोशित जीवन का चित्रण अत्यंत 'शब्दों में करते हैं । कवि को अनके माँ के सामने सिर्फ इसलिए पीटा जा रहा है, क्योंकि उन्होंने अपनी इच्छा सें जीवन जीना चाहा था स वह अपनी इच्छा से फूलों और नदी के लहरों को पसंद करने लगे थे स कवि भारतीय समाज की मानसिकता को अभिव्यक्त करते हैं । सवर्णो व्दारा दलितों को 'शारीरिक यातनाएं तो दी ही जाती हैं, लेकिन उससे भी अधिक मानसिक यातनाएं दी जाती हैं स जाति–पाति के भेदभाव और वर्ण–व्यवस्था में कोई बदलाव नहीं आया हैं,– जयप्रकाश कर्दम लिखते हैं–

"मक्कार हैं वे लोग
जो कहते हैं कि,
वर्णव्यवस्था अप्रासंगिक हो चुकी हैं ।
जब तक स्मृतियाँ रहेंगी
रामायण, गीता और वेद रहेंगें
तब तक श्शुचिता रहेंगी ।
(जयप्रकाश कर्दम–गुंगा नहीं था में– पृ.३०)

दलितों को अपनी इच्छा से जीवन जीने नहीं दिया जा रहा है । उसे आज भी सवर्णों के इशारे पर ही चलना पडता है स आज दलित युवक पढ–लिखकर अपने अधिकारों के प्रति सजग हुआ है, वह अपने अधिकारों के प्रति संघर्ष कर रहा है । लेकिन उसे अपने संघर्ष की सजा भुगतनी पड रही है. । जयप्रकाश कर्दम लिखते हैं –

" सीखना होगा दलितों को भी,
कलम का महत्व
हथियार के रुप में उसका प्रयोग,
क्योंकि,
कलम सें लिखे जा सकते हैं,
परिवर्तन के गीत
उध्वस्त किए जा सकते हैं अन्याय के किले "
(जयप्रकाश कर्दम–तिनका तिनका का आग में– पृ.३०)

आज–तक दलित चुप ही रहा है, लेकिन चुप रहने का खामियाना उसे सदियों से भुगतना पडा है, इसीलिए वह अब चुप नहीं रहना चाहतां । कवि दलितों के आक्रोश को विद्रोह में बदलते देख रहा है! इसी विद्रोह को वह अपने तीखे शब्दों व्दारा प्रस्तुत करता हैं–

"बस्स ।
बहुत हो चुका चुप रहना
निरर्थक पडे पत्थर
अब काम आयेंगे संतप्त जनों के "
(ओमप्रकाश वाल्मीकि–बस्स!बहुत हो चुका–पृ.८०)

दलित अब अन्याय और अत्याचार सहने के विरोध में है । वह अब हम सारों से यही प्रश्न पूछता है कि क्या हम 'मानव' नहीं है ? क्या हमारी यातनांएं मानव की यातनाएं नहीं हैं ?

अब सवर्णो के प्रति उसकी वाणी अत्यंत कठोर हो चुकी है स कवि के शब्दों में –

"मेरे पुरखों मुझे क्षमा करना
मैंने तुम्हारी रस्में तोडी हैं,
मैंने सिर झुकाकर पाय लागू
अपनाने की परंम्परा नाकारी हैं । "
(पुन्नीसिंह–भारतीय दलित साहित्य–, पृ.१३७)

सवर्णो ने संस्कृति को मानों ऐसे जकडकर रखा है, जैसे उसपर उन्हीं का अधिकार हो । अब दलितों को केवल किसी की सहानुभूति की आवश्यकता नाहीं बल्कि उसे अब सब के साथ बराबर का दर्जा चाहिए और जब तक वह न मिल सकता तब–तक वह चुप रहनेवाला नहीं है। कवि दलितों के संघर्ष के साथ उसकी मांग को बुलंद करते हैं । उसकी उथार्थ स्थिति का सीधा चित्रण करते हैं–

" मेरे श्रम और शोषण से स फले फूले हैं,
मेरी हिंसा और अपमान पर स खडे हैं,
असमान और अन्याय के स ये सारे किले."
(जयप्रकाश कर्दम–गूंगा नहीं था मैं – पृ.११)

दलित–श्रमिक खुद दुःख कष्ट सहन कर लेते हैं, लेकिन किसी दूसरों को कष्ट नहीं देते है! खुद भूखे, प्यासे और नंगे रहकर दूसरों को सुख देने की साचते रहते हैं, खुद हमेशा से शोषित रहते हैं लेकिन किसी का शोषण नहीं करते । शोषित दलितों की अंतरिक वेदना को कवि ने स्पष्ट किया है–

" और, मैं चुपचाप सुनता रहा
निरंतर बजता रहा
मेरे भीतर अनहद नाद
सन्नाटों की खामोश चीख सा "
(ओमप्रकाश वाल्मीकि–बस्स!बहुत हो चुका,पृ.२८)

हजारों वर्षो से हमारी समाज व्यवस्था में दलित पीडित रहे हैं । अनंत यातनाओं की दुःखों की अंतहीन त्रिवेणी आज भी प्रभावित है । दुःखो की एक लंबी श्रंखला है जिसका 'अनहद' स्वर उसे सुनाई देता हैं अर्थात वह स्वर दुःखों का स्वर हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि, साठोत्तरी हिंदी कविता में दलित जीवन की सही दास्तान का चित्र अपनी अंतरंगता से उभर कर प्रकट हुआ है! हजारों वर्षो से एक समाज ने जो दुःख भोगा, जो सहा, जिन परिस्थितियों से वह गुजरा, उसकी प्रतिक्रिया, अभिव्यक्ति, उस व्यवस्था के प्रति विद्रोह इन कविताओं में दिखाई देता है । यह कविताएं वंचितों की वेदना का स्वर है! वे दलितों को संघटित होकर एक साथ संघर्ष करने तथा अपनी स्थिति मे सुधार लाने की प्रेरणा देते है । यह कविताएं घृणा, अन्याय, अत्याचार करने की जो सदियों से मानसिकता रही है उसके साथ लडाई करने, जूझने और अपने हक की सुविधा, व्यवस्था प्राप्त करने का आव्हान करती हैं । अत्याचार सहते वर्ग की आंखे खोलने का पूरा–पूरा प्रयास इन कविताओं ने किया हैं । यह कविताएं एक विशेष स्थिति की ओर संकेत करती हैं । दलितों के संघर्षपूर्ण जीवन का पूरा दस्तावेज इन कविताओं में दिखाई देता है! मानवता का पक्ष लेती यह कविता किसी विशिष्ट जाती को, सत्ता को नकारती हैं । कविता के विषय, सामाजिक विषमता के परिणाम, शोषण के सही कारणों का विश्लेषण और इसे अभिव्यक्त करने के लिए ईमानदार 'शब्द योजना यही वह कारण है कि यह कविताएं हिंदी लित कविता में अपना विशिष्ठ स्थान रखती है! साठोत्तरी हिंदी दलित कविता मे मानवतावाद का स्वर स्पष्ठ रूप से दिखाई देता है!